बालविज्ञान प्रस्तुत

दादा भगवान

भाग-३

प्रस्तावना

'दादा भगवान' वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरुष थे। उन्हें बचपन से ही आत्मा को पहचानने की, परम तत्व को प्राप्त करने की लगन थी। रोज़मर्रा के जीवन में होनेवाली घटनाओं का वे वैज्ञानिक तरीक़े से विश्लेषण करते थे, उनके पीछे रही हुई पुरानी भ्रामक लौकिक मान्यताओं से दूर रहकर वे सच्ची समझ को अपनाते थे। तार्किक प्रश्नावलियों द्वारा चिंतन करके दुनिया की पज़ल सोल्व करने का उन्होंने अद्‌भुत तरीक़ा अपनाया था। उनके गृहस्थ जीवन की और व्यवसायिक जीवन की कितनी ही प्रेरणादायक घटनाएँ उनके ऐसे ही संशोधक हृदय को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सभी के लिए दादा भगवान की बातें जीवन जीने की कला सीखने के लिए बहुत सुंदर दिशानिर्देष करेंगी और जीवन के ध्येय को समझने की प्रेरणा देंगी। यह पुस्तक हमें उनके प्रेरणादायक जीवन की घटनाओं का हृदयस्पर्शी परिचय करवाती है।

दादा भगवान के जीवन की घटनाओं को उनके ही श्रीमुख से निकली हुई वाणी में से लेकर उसी रूप में चित्रांकित करने के प्रयत्न किए गए हैं। आपको इस पुस्तिका में चित्र या लेखांकन में कोई भी त्रुटि लगे तो वह संकलनकर्त्ता की है। ऐसी कोई भी कमी रह गई हो तो उसके लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

- जय सच्चिदानंद

प्रकाशक :
श्री अजीत सी. पटेल
महाविदेह फाउन्डेशन
५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४०४०८

मुद्रक :
महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चेंम्बर्स, नई रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४२९६४

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाइवे, अडालज
जिला-गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात-भारत
फोनः (०७९) ३९८३००३४
email : balvignan@dadabhagwan.org
website : www.dadabhagwan.org
kids.dadabhagwan.org

प्रथम आवृत्ति : २००० कॉपी नवंम्बर २०११

मूल्य : भारत रु.४०

©: All Rights Reserved - Mahavideh Foundation
Address as above

'दादा भगवान' के नाम से प्रख्यात हुए अंबालाल मूलजीभाई पटेल सन् १९२८ में बीस वर्ष की उम्र में पहली-पहली बार मुंबई शहर गए थे। उस समय मुंबई जाना तो विदेश जाने जितना महत्वपूर्ण लगता था।

दादा भगवान

भाग-३

यहाँ चार लाख की आबादी है लेकिन म्युनिसिपालिटी के प्रबंध का क्या कहना! नगरी को कितना सुंदर और साफ-सुथरा रखा है! और रोड और लाइटें भी कितनी अच्छी हैं!

सचमुच ही यह अलबेली नगरी है। सभी तरह की फ़ेसिलिटिवाली चीज़ें यहाँ पर मिलती हैं। जगह-जगह पर बस, दुकान और होटल ही देख लो!

इरानी होटल

अरे, यह तो वही लगती है 'इरानी की चाय' जिसकी बहुत तारीफ होती है! हर सड़क के कोने पर 'ईरानी की चाय' की दुकानें खोल दी हैं!

अरे वाह! एक आने में इतनी अच्छी चाय!

एक दिन अंबालालभाई मित्र को लेकर ताजमहल होटल में पहुँचे।

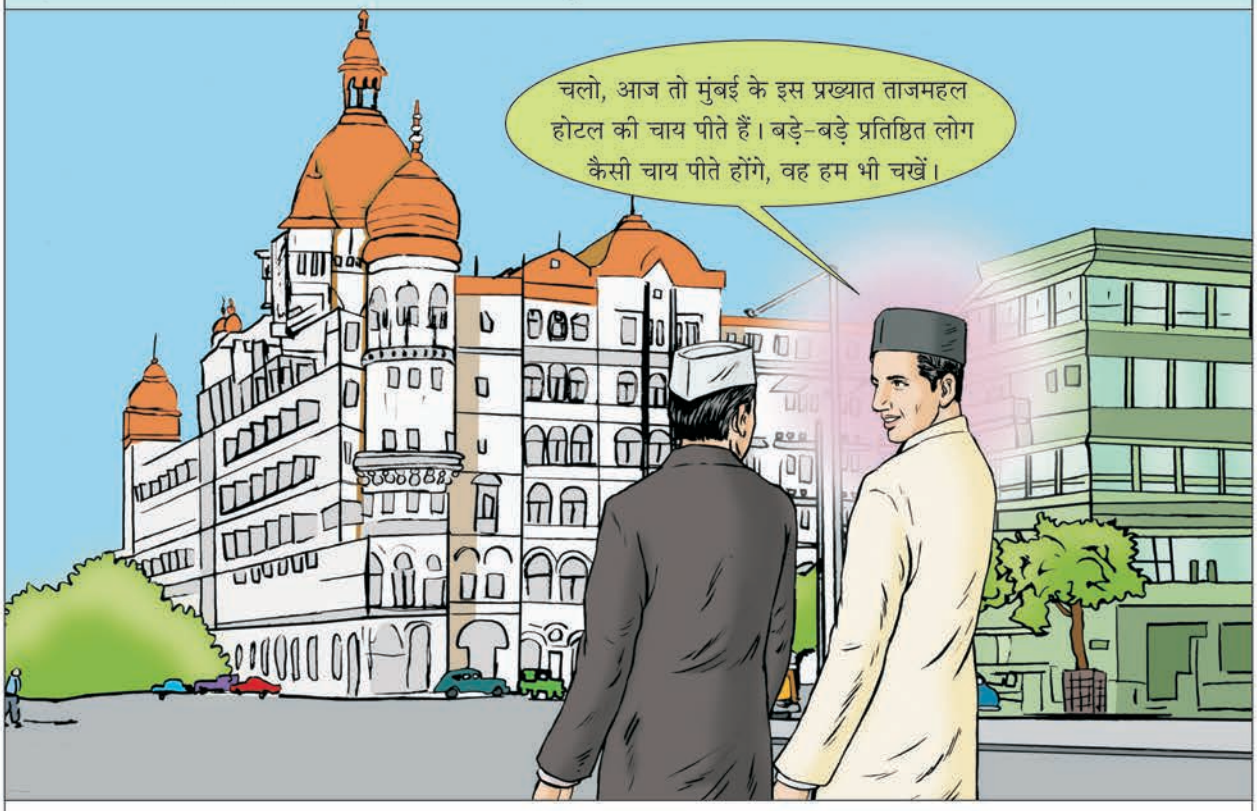

हर एक चीज़ का अनुभव लेकर अंबालालभाई उसमें से सार निकाल लेते थे।

अंबालालभाई बड़ौदा में जोगीदास सेठ की पोल में रहते थे। जोगीदास सेठ की पोल यानी पटेलों का मोहल्ला। वे जब भी मुंबई जाते, तब वहाँ का मशहूर हलवा या हाफूज़ के आम लेकर आते थे।

अंबालालभाई की भाभी पड़ोस के घरों में मिठाई देने निकलती हैं।

अंबालालभाई को काम से बार-बार मुंबई जाना पड़ता था।

इस बार तो मैं मुंबई जाकर आया लेकिन बहुत काम था, इसलिए हलवा या आम कुछ भी नहीं ला सका।

अंबालालभाई इस बार कुछ भी नहीं लाए?

आप किसकी बात कर रहे हो?

आप मुंबई जाकर आए न? तो इस बार हलवा या आम वगैरह साथ में नहीं लाए?

ओत्तारी! यह तो जबरदस्त मग़ज़मारी खड़ी हो गई है! एक बार चीज़ लाकर सभी को बाँटी, तभी यह परेशानी खड़ी हुई न? पहले तो ऐसी पीड़ा नहीं थी! 'यह क्यों नहीं लाए?' ऐसी अपमान भरी हुई वाणी नहीं सुननी पड़ती थी।

इसलिए अब कोई भी चीज लाना बिल्कुल बंद ही कर देना है! मुफ्त मिले, तब भी नहीं लानी है। फिर किसीके मन में अपेक्षाएँ खड़ी ही नहीं होंगी न!

यानी खुद पटेल थे,फिर भी उन्हें पटेलों के साथ का ऐसा बर्ताव पुसाता नहीं था। पटेल तो क्षत्रिय लक्षणवाले माने जाते हैं। किसी भी अवसर पर या परेशानी में आमने-सामने सिर कटाने या काटने की सौदेबाज़ी में आ जाते हैं।

मुझे तो सिर लेने देने की बात समझ में नहीं आती। वे अपना सिर दें, तो मुझे चाहिए नहीं और मुझे मेरा देना नहीं है। मुझे तो मेरे आत्मा का काम निकाल लेना है। ऐसी सौदेबाज़ी में पड़ने की बिल्कुल इच्छा नहीं है।

और फिर अंबालालभाई को वणिकों की समझदारी के प्रति मान उत्पन्न हुआ क्योंकि वणिक क़ौम लेन-देन की झंझट में नहीं पड़ती। मुश्किल के समय में समझदारीवाला मार्गदर्शन देनेवाली वणिक क़ौम के बीच में रहना निश्चित किया और बड़ौदा में मामा की पोल में रहने गए।

कहीं बाहर घूमना हो या काम के लिए जाना हो तो अंबालालभाई मोटरगाड़ी या रिक्शा की बजाय हमेशा घोड़ागाड़ी में ही बैठना पसंद करते थे।

अरे अंबालालभाई, आप घोड़ागाड़ी में जाओगे?

हाँ भाई, आज के सुधरे हुए ज़माने के लोग तो घोड़ागाड़ी में बैठने का नाम ही नहीं लेते, लेकिन फिर बेचारे घोड़े खाएँगे क्या? उनके मालिक की कमाई ही नहीं होगी न?

सेठ, एक सवारी के बारह आने लूँगा।

हाँ, हाँ, कोई हर्ज़ नहीं। बारह आने होते होंगे तो मैं तुझे एक रुपया दूँगा। चल तो सही!

तेरा और तेरे घोड़े का सब ठीक चल रहा है न?

सेठ, आप ही ऐसे हैं जो किच-किच नहीं करते। दूसरी सवारियाँ तो, उन्हें गर्ज़ होती है इसलिए बैठते ज़रूर हैं, लेकिन फिर किच-किच करते हैं कि घोड़े को हंटर मारकर तेज़ी से दौड़ा। और उनकी किच-किच से परेशान होकर मैं घोड़े को चाबुक मारता हूँ। घास खाने के बदले चाबुक खाने को मिलता है, इसलिए घोड़ा तो बेचारा परेशान होकर बल्कि गाड़ी को उल्टा दो लातें मारता है! फिर आखिर में उतरते समय बारह आने के बदले ग्यारह आने देते हैं और मग़ज़मारी करते हैं कि हमें देर करवा दी। 'दाता-दाता चले गए, रह गए मख्खीचूस! उल्लू का पठ्ठा रह गया!'

ले, यह बारह आने के बजाय एक रुपया देता हूँ, तेरे घोड़े को अच्छी तरह खिलाना।

साहब आप जैसा रईस तो कोई नहीं देखा! आप तो दानवीर हैं! आप तो सचमुच औलिया* जैसे इन्सान हैं!

अंबालालभाई बहुत उदार और नोबल मन के थे। छोटे-अन्डरहेन्ड लोगों के प्रति अधिक प्रेम रखते थे। छोटे लोगों की बात सुनते भी थे और उनकी मदद भी करते थे।

*औलिया-खुदा का बंदा

यों तो अंबालालभाई हिसाब में पक्के थे, कभी सफर के लिए बस में जाने का मौका आए, तब टिकट लेने के बाद कन्डक्टर के पास से बाकी के पैसे अच्छी तरह से गिनकर वापिस लेते थे।

उनकी वजह से कन्डक्टर को बचे हुए पैसों को खुद की जेब में डाल लेने की गलत आदत नहीं पड़नी चाहिए, इसका वे खास ध्यान रखते थे।

अंबालालभाई को ऐसी आदत थी कि जान-पहचानवाले या रिश्तेदार किसीको बस में देखते थे तो उनसे रहा नहीं जाता था।

इस तरह, अंबालालभाई परोपकारी स्वभाववाले थे। उन्हें हमेशा ऐसा ही रहता था की किस तरह से दूसरों की मदद कर सकें.

क्यों आज तेरा मुँह उतरा हुआ दिख रहा है?

घर में बीमारी है और पैसों की बहुत तंगी है। समझ में नहीं आता कि ऐसे हालात में मैं क्या करूँगा?

अंदर के कमरे की अलमारी खोलकर पैसे निकालते हुए....

किसीको मुश्किल परिस्थिति का सामना करने का समय आए और वह ढीला पड़ जाए तो मुझसे देखा नहीं जाता।

ले भाई, तेरी आपत्ति में तुझे यह काम आएगा न!

अंबालालभाई को किसी भी प्रकार का लोभ नहीं था। किसी चीज की जरुरत ही नहीं थी! बल्कि जो उनके खुद के पास होता था, वह भी किसी व्यक्ति को परेशानी में देखते कि तुरन्त ही दे देते थे। उनकी पत्नी हीराबा खूब भद्र और सरल थीं। दिल की साफ और साफ-साफ बोलनेवालीं ।

आप तो बिल्कुल भोले हैं। आपके हाथ में तो पैसे देने ही नहीं चाहिए।

सचमुच में मुझे मत देना। क्योंकि यदि मेरे पास पाँच लाख रुपये भी आएँगे और किसीको ऐसी मुश्किल में देखूँ, तो मैं उसे दे दूँगा। मेरे पास कुछ रखूँगा नहीं!

इस प्रकार उनसे दूसरों का दुःख सहन नहीं होता था। परोपकारी स्वभाव के कारण खुद का दूसरों को दे देते थे।

अंबालालभाई को घड़ी में चाबी लगाना भी पसन्द नहीं था। तो एक बार उनके भागीदार उनके लिए एक घड़ी ले आए।

दूसरों को देने में उन्हें अधिक आनंद आता था, खुद की पसंदीदा चीज़ भी दूसरों को दे देते थे।

क्या सचमुच आप मुझे दे दोगे? अरे वाह! मेरे कैसे धन्यभाग!

आप तो भोले हो। सभी को दे देते हो। अब घड़ी के बिना मैं समय किस तरह देखूँगी?

इनकी बात भी सही है। क्योंकि कोई भी आए और ऐसा देखे बिना कि वह सचमुच में दु:खी है या नहीं, वह जो भी माँगे मैं उसे तुरन्त दे देता हूँ। मुझसे ऐसी भूल होती ही रहती है और सामनेवाले को इससे गलत प्रोत्साहन मिल जाता है।

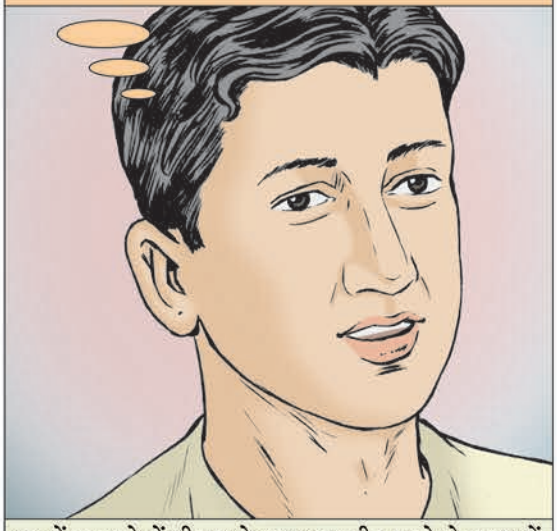

घर में इस बारे में हीराबा के साथ बातचीत करने से समझ में आया कि यह तो दूसरों की मदद करते हुए घरवालों को दु:ख होता है, इसलिए **व्यवहार में नोर्मेलिटी रखनी चाहिए।** उसके बाद, घर का प्रबंध हीराबा को सौंप दिया।

लो फिर, आज से चाबियाँ आप रखो।

कॉन्ट्रैक्टर के रूप में समुद्र में बंदरगाह पर जैटी बनाने की और ब्रिज बनाने के बड़े-बड़े कामों की ज़िम्मेदारी लेते थे। उनके पास इस काम से संबंधित अनोखी तकनीक थी। जब जैटी या ब्रिज बनाना होता, तब वे नाव में बैठकर साइट पर 'सर्वे' करने निकल पड़ते थे।

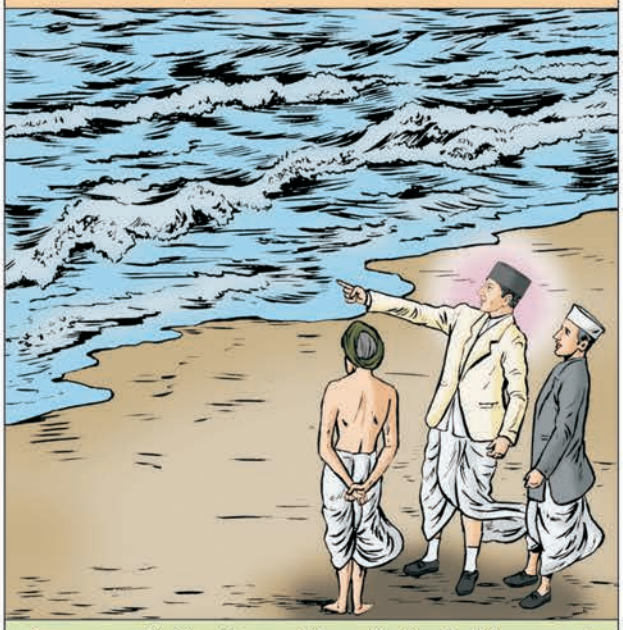

साहुल का उपयोग करके उसकी मदद से कन्स्ट्रक्शन का प्लान तय करते थे। किस तरफ़ से, किस तरह से चिनाई का काम शुरू करना है, वह सब नक्शे के बगैर भी ग़ज़ब की सूझ से उनकी दृष्टि में आ जाता था।

और इस काम के लिए कितना सीमेन्ट और कितने लोहे का उपयोग होगा, कितने मज़दूरों की ज़रूरत पड़ेगी, और इसे बनाने में कितना समय लगेगा, वह सारा कैलक्युलेशन वे पेपर-पेन्सिल के बिना और कैलक्युलेटर के बिना आराम से कर सकते थे।

और ये सभी चीज़ें बारीकी से तय करने के बाद वे गवर्नमेन्ट का टेन्डर भरते थे और हमेशा उनका कोटेशन सस्ता साबित होने से उन्हें कॉन्ट्रैक्ट मिलते गए।

इस प्रकार उनमें व्यवहार संबंधी कुशलता भी थी। जिसे व्यवहारकला-बोधकला आती है, वह व्यक्ति जीवन में कभी भी, कहीं भी पीछे नहीं रहता।

उनके भागीदार श्री कान्तिभाई का स्वभाव उन्हें रास आ गया था। वे दोनों ही स्वतंत्र सोचवाले थे। लोगों के साथ बहुत मेल-जोल नही रखते थे। लोग उन्हें अलग ही मानते थे। कोई अहंकारी भी कहता था, लेकिन वे दोनों अहंकारी नहीं थे, लेकिन स्वतंत्र सोच थी उन दोनों की।

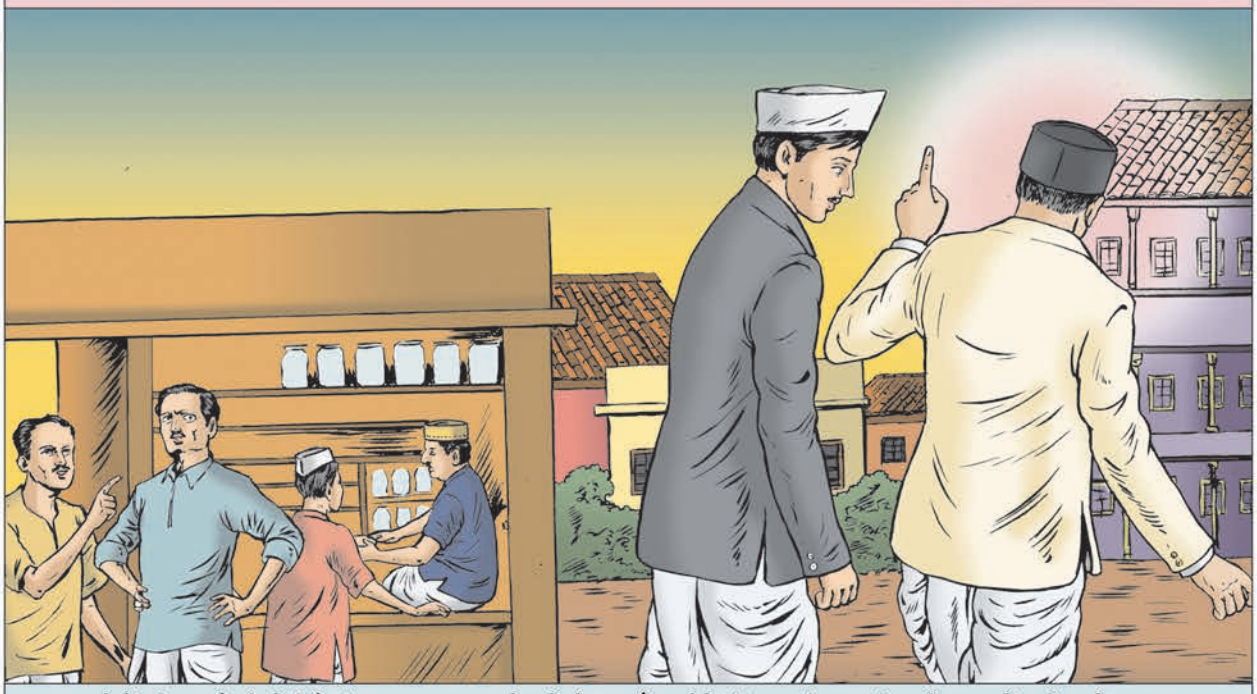

सामान्य लोगों की बात कैसी होती है? 'अब आप क्या करनेवाले हो? कहाँ जाओगे?'' आपकी बुआजी अभी तक क्यों नहीं आई? आपका काम कैसा चल रहा है?' वगैरह...लेकिन ऐसी बगैर काम की बातें करना अंबालालभाई को पसंद नहीं था। लोग जब फालतू बैठे होते हैं, तब ऐसी गप्पबाज़ी में समय बिताते हैं, परन्तु अंबालालभाई को यह सब ठीक नहीं लगता था। इसलिए वे रोज़ व्यापार के बाद का समय भागीदार के साथ सत्संग करने में बिताते थे। अंबालालभाई की माता झवेरबा ने भी कान्तिभाई को खुद के बेटे की तरह ही रखा था। इसलिए वे भाईयों जैसे ही संबंध रखते थे। कोई जुदाई मानी ही नहीं।

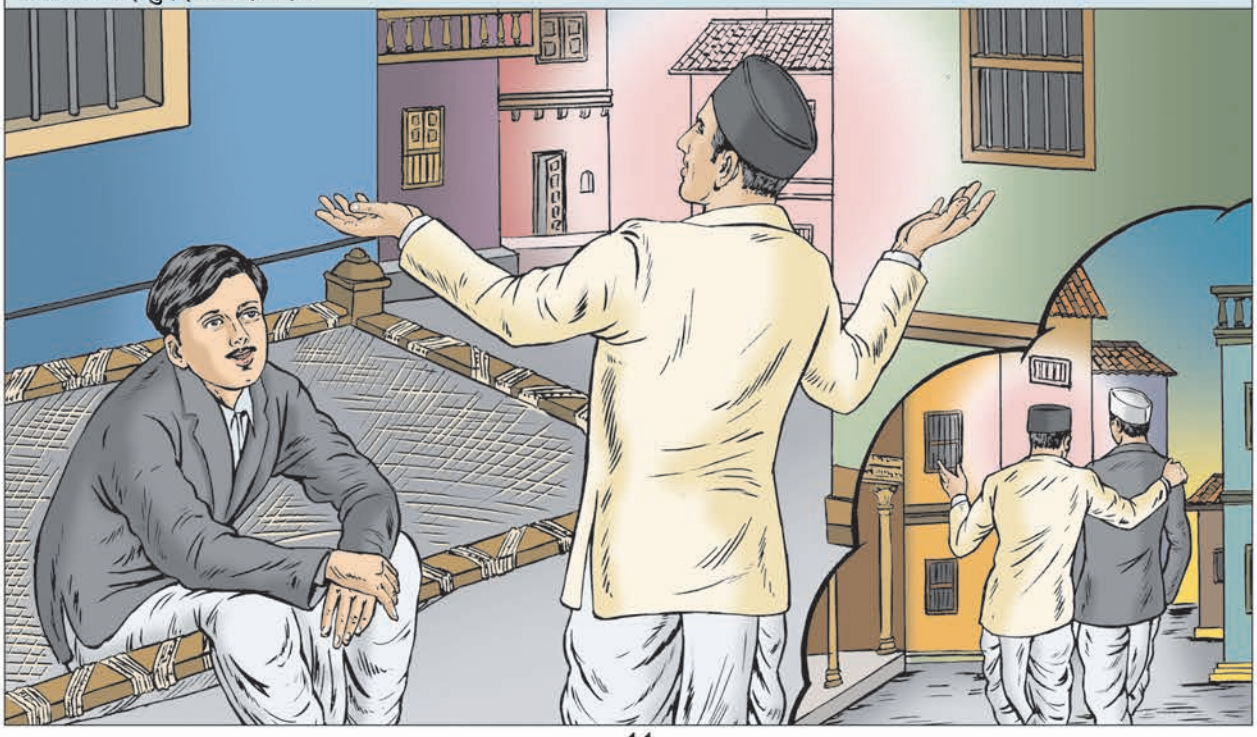

अंबालालभाई का व्यवसाय संबंधी प्रबंध बहुत सुंदर था। कॉन्ट्रैक्टर के रूप में पाँच अरब का व्यापार करना हो तो कर सकते थे। रूपरेखा, दर्शन, सबकुछ टॉप। अंबालालभाई ने सुख की दुकान खुल्ली रखने का निर्णय किया था न! एक बार नगीनभाई नाम के मित्र व्यापार के सिलसिले में मिलने आए।

खुद की सूझ-बूझ के आधार पर अंबालालभाई ने उन्हें छुड़वाया।

मेरे साथ भागीदारी कर लो, फिर देखो तो सही, बारह महीनों में लाख रुपये की कमाई करवा दूँगा। आपको गाड़ी भी मिलेगी। फिर अगर आपको एक लाख से कम मिलेंगे, तो मैं बाकी के दे दूँगा। और उससे ज़्यादा मिले तो सभी आपके! फिर देखो आपके तो ऐश हो जाएगे!

आपसे लाख रुपये लेकर मेरी क्या दशा होगी? आप तो वापिस से रोते हुए आओगे। आप रोने की आदतवाले हो और मैं भी फिर रोनेवाला बन जाऊँगा। हमारे भागीदार के साथ हम पूरे दिन भगवान की भक्ति करते हैं। अपने ऐसे भागीदार को छोड़कर मैं कहाँ वापिस आपके साथ झंझट में पड़ूँ? इससे आपका रंग मुझे लग जाएगा।

इसके बजाय तो मेरे भागीदार क्या बुरे है? वे तो कहते हैं, 'यह सब काम मैं कर लूँगा। आप तो दो-तीन महीनों में एक दिन सलाह देने आ जाना, बाकी के समय में आप आध्यात्मिक अध्ययन करके आत्मा को ढूँढ निकालो।' मुझे वही ठीक लगता है।

इस प्रकार वे कच्चे कान के बनकर दूसरों की लुभावनी बातों में कभी भी नहीं आते थे।

आज तो नगीनभाई आए थे वे तो बंगले में रहने जाने की बात कर रहे थे, तो क्या आपको वहाँ अच्छा लगेगा?

नहीं, इतने सारे कमरों की क्या ज़रूरत है? बिना बात के खर्चा बढ़ाएँ, बल्कि मुझे सफाई करते रहना पड़ेगा, नौकर-वौकर रखना मुझे पसंद नहीं है।

कितने बड़े मन की हैं!

अंबालालभाई और हीराबा दोनों के मत एक ही तरह के थे, खुद के लिए किफायती और औरों की मदद करने वाले थे।

एक बार अंबालालभाई के भागीदार के भाई का बेटा मनुभाई मुश्किल में पड़ गया। उसका कामकाज चला गया और वह बिल्कुल बेकार हो गया था।

अंबालाल चाचा बिल्कुल बेकारी आ गई है। मेरा कुछ कर दोगे तो आपका उपकार कभी भी नहीं भुलूँगा।

कल से मेरे काम में मदद करने आ जाना।

अंबालालभाई खुद के काम में से थोड़ा छोटा-मोटा कामकाज मनुभाई को सौंपने लगे और इस तरह उन्हें अलग-अलग काम सिखाते गए और तैयार करते गए। बदले में खुद की इन्कम का दस-पंद्रह प्रतिशत मनुभाई को देने लगे।

नगीनभाई ने अंबालालभाई को खुद का भागीदार बनाने के लिए एक लाख की ऑफर दी थी, उन्हें लगा इसमें मनुभाई को व्यापार करने का अच्छा अवसर है।

मैंने तो इस मित्र का भागीदार बनने से मना कर दिया है, लेकिन इसके साथ व्यापार में दूसरा कोई घुस जाए, इसके बजाय मनुभाई क्या बुरे हैं?

इसलिए अंबालालभाई ने नगीनभाई के साथ बातचीत करके उनके काम के लिए मनुभाई को लगा दिया और अच्छी तनख़्वाह भी तय करवा दी। इस तरह मनुभाई का काम अच्छी तरह से करवा दिया।

इस घटना में भी उनकी सूझ और उनका परोपकारी स्वभाव दिखाई देता है।

अंबालालभाई की एक बड़ी विशेषता थी कि वे सभी धर्मों को स्वीकार करते थे। वे कहते थे कि **हर एक धर्म अपनी-अपनी डिग्री पर है और उस डिग्री पर उस धर्म की बात सच्ची और स्वीकारने योग्य होती है। इसलिए हर एक धर्म जैसा है, उसे उसी तरह से स्वीकारते थे।** धार्मिक पठन और चिंतन के दौरान अंबालालभाई पर जैन धर्म का बहुत गहरा असर पड़ा था।

*परिषह-सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास वगैरह बाईस आपत्तियाँ ।

हर एक घटना का ऐसी अनोखी प्रकार से चिंतन करके वैज्ञानिक तरीक़े से प्रमाण इकट्ठे करने के लिए जाँच करके देखनेवाले अंबालालभाई ऐसी तार्किक प्रश्नावलियाँ खड़ी करके खूब ही मंथन करते थे।

* चर्या-आचरण

बड़ौदा में अंबामाता के मंदिरवाली घड़ीयाली पोल में, सयाजी स्कूल के पास एक उपाश्रय था।

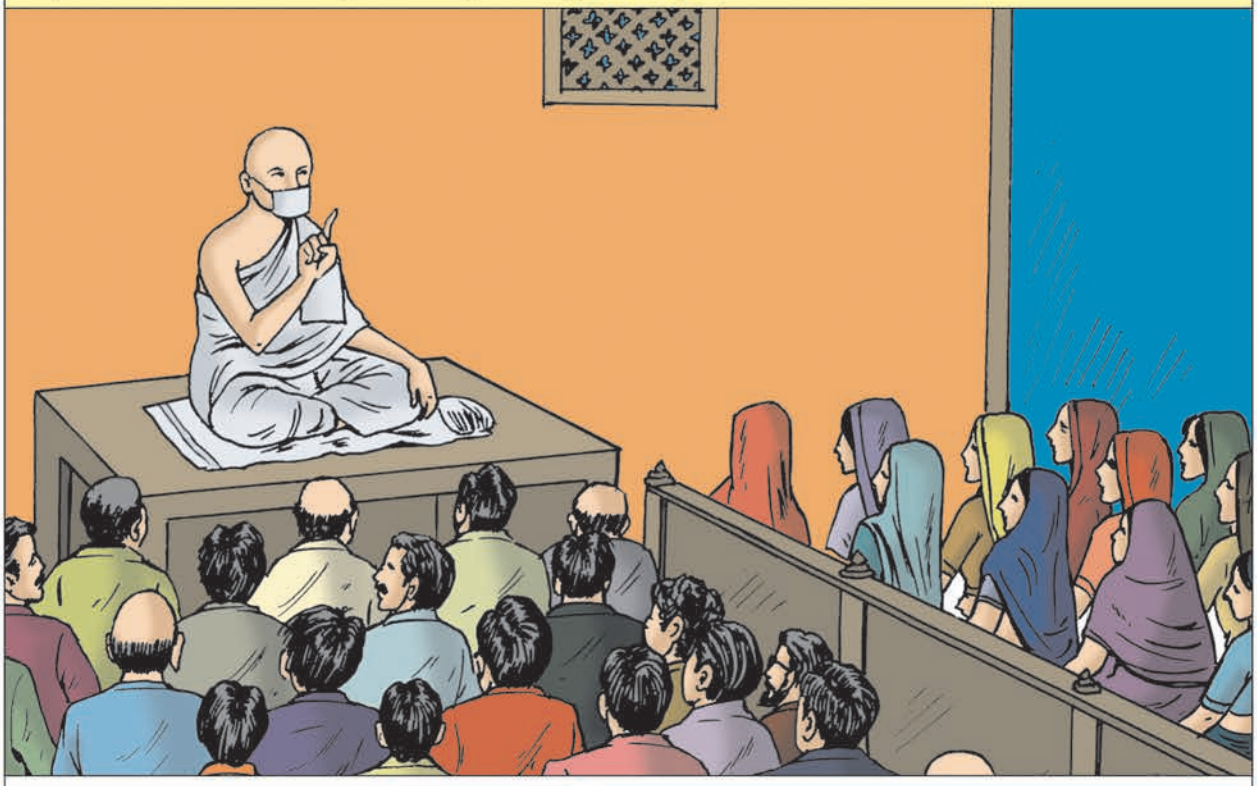

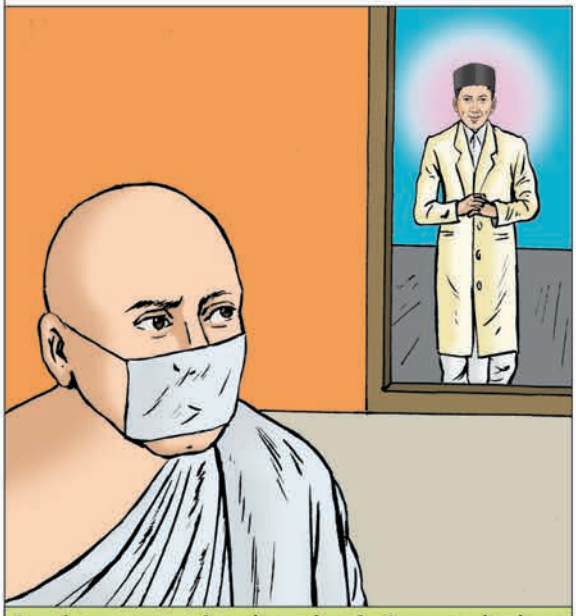

कितनी बार ज्ञान की बातें सुनने की जिज्ञासा को लेकर अंबालालभाई उपाश्रय में भी जाते थे, वहाँ पर महाराज के पास बैठकर उनकी बातें सुनते थे। खुद के मन के समाधान के लिए वे महाराज से बहुत प्रश्न भी पूछते थे। अंबालालभाई को आते हुए देखकर महाराज घबरा जाते कि अब बहुत मुश्किल प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा!

महाराज का व्याख्यान सुनने के बाद दरवाज़े से बाहर आकर चप्पलों की तरफ़ देखते हुए।

अरेरे! मुझे तो जूते थोड़े भी पुराने हो जाए तो तुरन्त ही निकाल देने की आदत है! और ये तो फर्स्ट क्लास बिल्कुल नये जूते चले गए! अब घर तक कैसे पहुँचूँगा? एक तो आज इतना अच्छा लंबा कोट पहना है, और फिर नंगे पैर! बहुत फ़ज़ीहत होगी! और मेरी आबरू चली जाएगी। लेकिन रोड तक तो नंगे पैर चलना पड़ेगा न!

अब जो होगा सो होगा! अब तो जो हुआ, वही करेक्ट है।

अंबालालभाई को पहले से ही ऐसी आदत थी कि जो हो चुका उसीको करेक्ट मानकर स्वीकार कर लेते थे।

जय श्रीकृष्ण अंबालालभाई।

जय श्री कृष्ण।

ले! इस व्यापारी को तो पता ही नहीं चला। लोग तो खुद अपनी ही चिंता में घूमते रहते हैं। मैंने क्या पहना है, यह देखने कि किसी को फुरसत ही नहीं है।

उस दिन से अंबालालभाई को पता चल गया कि जगत् तो पोलंपोल है। कोई इज़्ज़तदार है ही नहीं। इसलिए इज़्ज़त का ध्यान रखने का भय छूट गया, और असल इज़्ज़तवाले तो कौन हैं? 'तीर्थंकर' हैं। जिनके शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं फिर भी देवी-देवता उन्हें पूजते हैं।

उस दिन के बाद जब भी कभी जूते बाहर निकालकर मंदिर में जाने का मौका आता, तो उसके लिए अंबालालभाई ने बिल्कुल नया तरीक़ा ढूँढ निकाला। वे अपने जूते उतारकर उनके साथ बातचीत करते थे।

देखो भाई, तुमसे रहा जाए तो रहना और जाना हो तो चले जाना। हमारी ऐसी इच्छा नहीं है कि आप जाओ।

अंबालालभाई कहते थे कि इस तरह जूतों के साथ बातचीत कर लेने से अपना मन दोनों प्रकार की परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है। ऐसी समझ अंतर में रखी हो तो फिर 'जूते कोई उठा गया है', ऐसा जानने पर जो धक्का लगा था और आघात लगा था वैसी चंचलता फिर से कभी भी अनुभव नहीं करनी पड़ेगी। और हम जो काम करने आए होंगे, अपना चित्त उसीमें रहेगा।

अंबालालभाई ने खुद के व्यापार और घरखर्च की व्यवस्था के लिए बहुत ही प्योरिटिवाला दृष्टिकोण अपनाया था

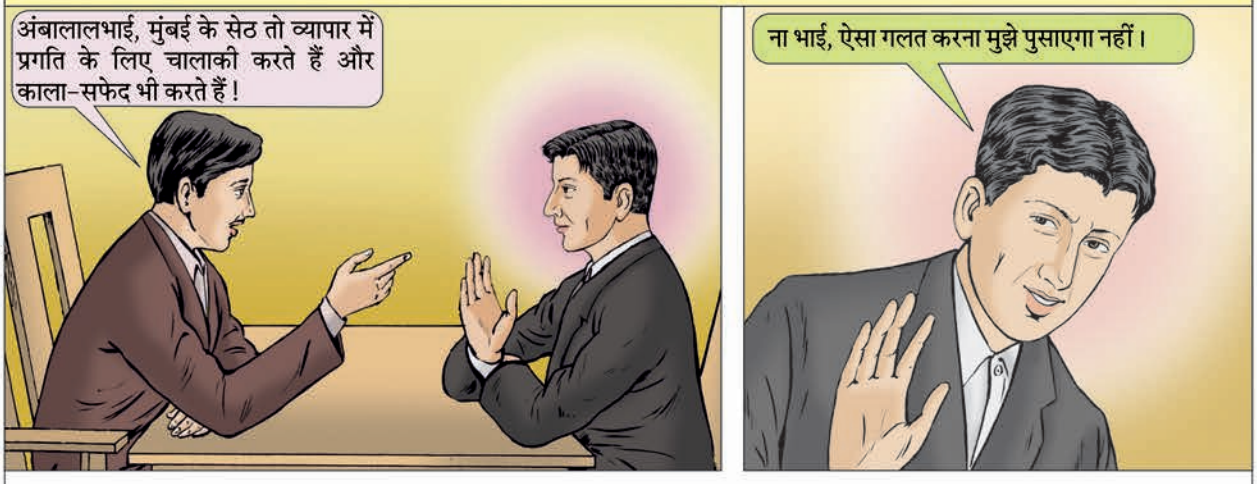

उस समय कॉन्ट्रैक्ट के धंधे में सब सीमेन्ट और लोहे की चोरी करते थे। सरकार का नियम था कि बीस थैली सिमेन्ट डालना है, उसके बजाय वे सोलह थैलियाँ डालते थे और चार थैलियाँ निकाल लेते थे। सीमेन्ट की एक थैली का भाव पाँच रुपये था। इतना सब करने से बीस रुपये की कमाई होती थी। कॉन्ट्रैक्ट के काम में ऐसा करना तो बिल्कुल मामूली बात थी । देखते ही देखते यह दूषण अंबालालभाई के काम में भी घुसने लगा।

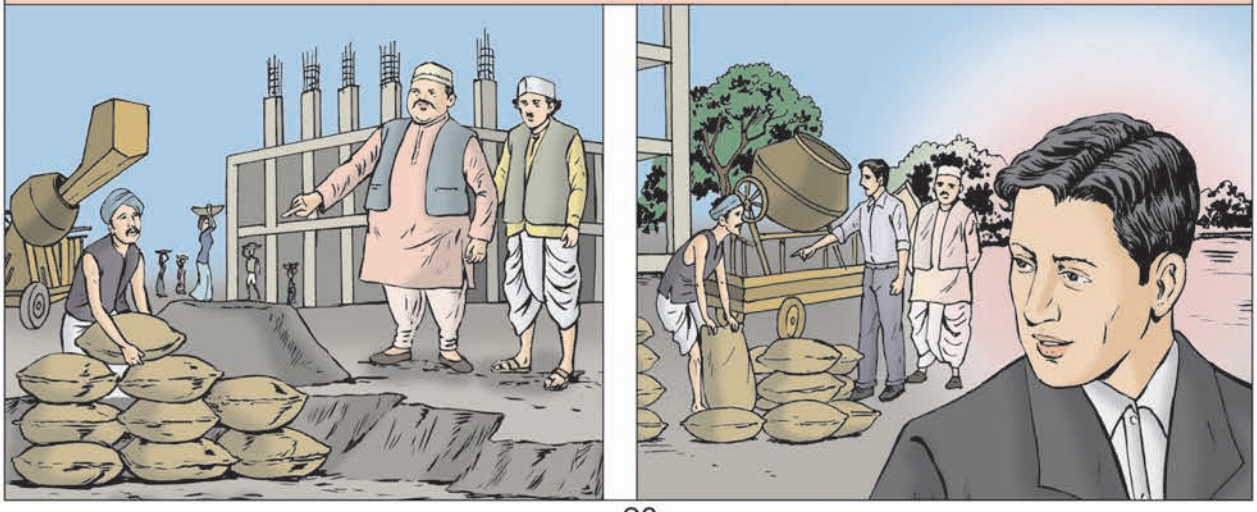

इस तरह गलत लक्ष्मी का आना अम्बालालभाई को पसंद नहीं था

देखो कान्तिभाई, व्यापार करने में एक सिद्धांत का मुझे बहुत ही सावधानीपूर्वक पालन करना है। जहाँ तक हो सके वहाँ तक अणहक्क की लक्ष्मी व्यवसाय में घुसने ही नहीं देनी है। फिर भी अगर संयोगवश घुस जाए तो वह काला धन मेरे घर में बिल्कुल ही नहीं आने देना है।

अंबालालभाई को समझ में आ गया कि यदि लक्ष्मी निर्मल होगी तो बुद्धि और मन अच्छे रहेगें। उस लक्ष्मी से घर में क्लेश नहीं रहेगा।

मेरे जैसा नॉन मेट्रिक सर्विस में जाए तो क्या मिलेगा?

आपके जैसा एक्सपर्ट होगा तो छह सौ-सात सौ रुपये मिलेंगे।

तो मुझे पाँच सौ रुपये ही घर ले जाने हैं, उससे ज़्यादा नहीं।

ठीक है, लेकिन व्यापार में जो फ़ायदा होगा, उस पैसे का क्या करना है?

वह तो जब इन्कमटैक्सवाले कहेंगे कि 'डेढ़ लाख भर जाओ', तब उस जमा हुई रकम में से भर देना। उस समय चिठ्ठी लिखकर मुझे बताने की भी ज़रूरत नहीं है। कभी नुकसान हो जाए, तब भी उस जमा रकम का उपयोग कर लेना। 'सारा उधार चुकाना ही है' ऐसी शुद्ध दानत हो तो कभी न कभी सबकुछ चुक ही जाता है। किसीकी लक्ष्मी अपने पास नहीं रहनी चाहिए।

कान्तिभाई खुद शेर जैसे थे, हर तरह की मशक़्क़त कर लें, ऐसे थे। दो ईंटो का तकिया बनाकर सो जाते थे! लोग उन्हें देखकर डर जाते थे। उनके बच्चे भी उनसे घबराते थे। उन्होंने खुद के बच्चों को अंबालालभाई को सौंप दिया था।

एक दिन उनके घर पर खाना खाकर सोने जा रहे थे, तब एक बच्चा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

बाहर आकर अंबालालभाई ने पूछा।

ऐसा? ओ हो...हो कितने अच्छे, राग में रो रहा है। जाओ आस-पास के बच्चों को बुला लाओ। यह कितना अच्छा संगीत सुना रहा है! चलो, हम सब सुनते हैं।

बालक स्तब्ध होकर देखने लगा और उसका रोना बंद हो गया।

फिर से एक बार जब वह बच्चा रो उठा तब...

देख, यह कागज़ कितना अच्छा है? तेरा हाथ दे तो!

अंबालालभाई ने कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके छोटे बच्चे के हाथ में दे दिए।

अब एक-एक टुकड़ा मुझे दे, देखते हैं!

वह बच्चा कागज़ के एक-एक छोटे टुकड़े को बीनकर एक के बाद एक अंबालालभाई के हाथ में रखता गया। इस खेल में मशगूल हो जाने के कारण वह आनंदित हो गया और अपना रोना भूल गया।

अंबालालभाई के पास ऐसी बोधकलाएँ हमेशा हाज़िर ही रहती थीं। व्यवहारिक सूझ के कारण नापसंद बात को भी पसंद में बदल देते थे।

जिसे भागीदार बनाया था, उन पर अंबालालभाई को पूरा-पूरा विश्वास था। उन्होंने कभी भी उनके सामने शंका की नज़र से देखकर कोई भेद नहीं डाला था। कभी भी हिसाब-किताब के बारे में पूछा नहीं था। भागीदार को जब बैंक में से पैसे निकालने होते तब उन पर संपूर्ण विश्वास होता था। सतत नज़र रखनी या हिसाब-किताब रखने की कोई वृत्ति ही अंबालालभाई में नहीं उठती थी। ऐसे अटूट संबंध में भी दरार डालने के लिए पच्चड़ मारनेवाला एक आदमी आ गया।

अंबालालभाई के हाज़िर जवाब को सुनकर वह तो एकदम हक्का-बक्का रह गया और चुप हो गया।

व्यक्ति को परखने के बाद किसीकी भी बात में आ जाएँ, वे ऐसे कच्चे कान के नहीं थे।

उनका फ्रेन्डसर्कल बहुत बड़ा था। एक मित्र के यहाँ गए तब....

उनके वहाँ पर एक पूरी और ज़रा-सा रस खा लेते हैं।

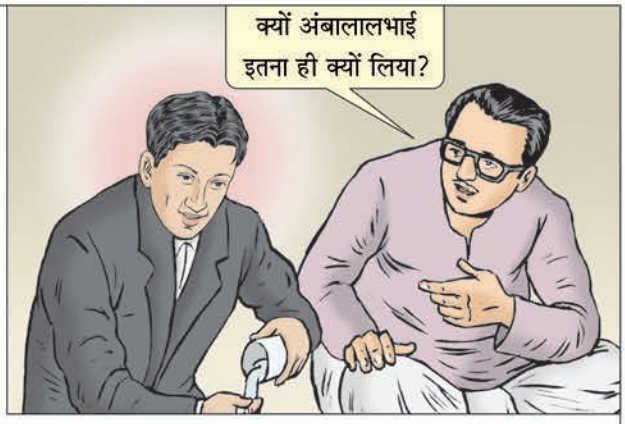

बहुत ही कम खाना खाकर खड़े हो गए।

बाहर निकलकर घर की तरफ़ जाते हुए।

मित्र जबरदस्ती ले गया और वहाँ भी उन्होंने बहुत ही कम खाना खाया।

घर की तरफ़ जाते हुए।

झवेरबा जैसी बा शायद ही किसीको मिलें। ऐसी बा को तो दु:ख कैसे दे सकता हूँ? और फिर बा घर पर भोजन के लिए मेरी राह देख रही होंगी।

चल तो फिर खाना खाने बैठें। तेरे बगैर मुझे खाना अच्छा नहीं लगता।

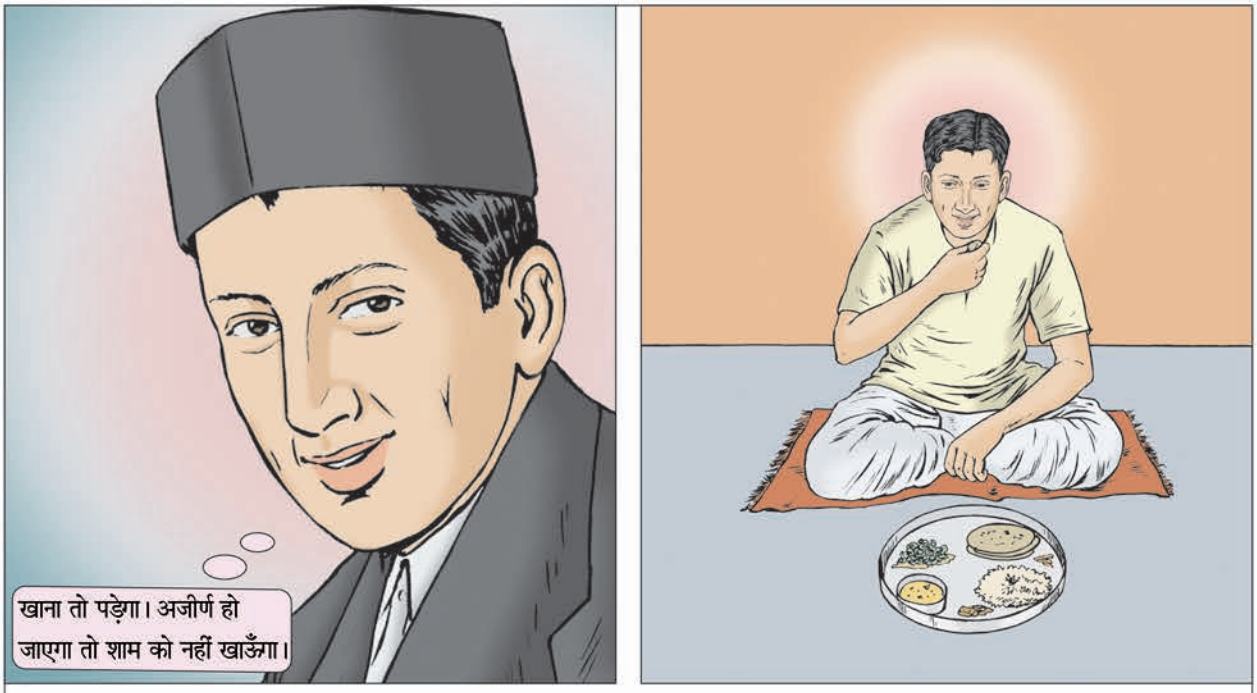

हीराबा समझ जाते थे।

और मज़ाक में झवेरबा से कहते थे।

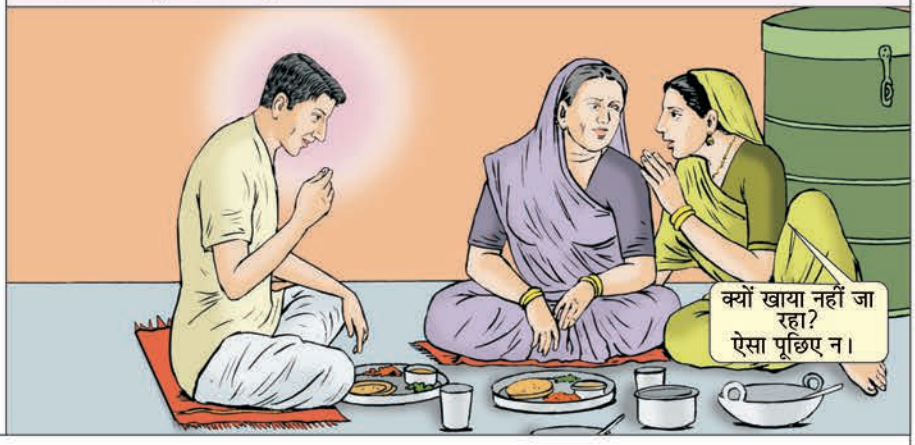

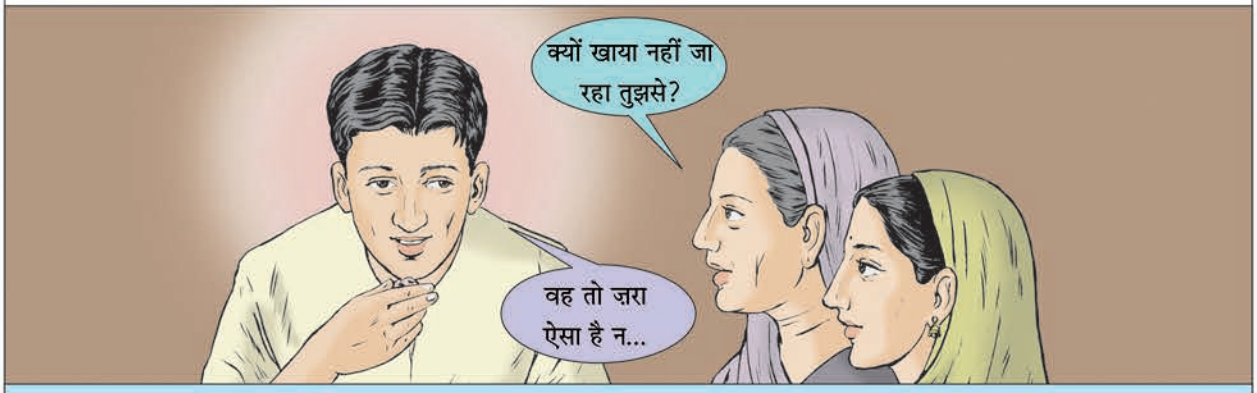

ऐसा कहकर समझा देते। अगर कभी ऐसा हो तब, दोपहर को एक बार खाने के बदले तीन बार खा लेते थे। एक जगह पर साढ़े ग्यारह बजे, दूसरी जगह पर बारह बजे, और तीसरी जगह पर साढ़े बारह बजे। **सबके मन का समाधान रहे इसलिए अंबालालभाई ऐसा करते थे,।**

एक दिन अंबालालभाई के मित्र उनके घर पर आए। उस दिन हीराबा ने चूरमा बनाया था और चूरमे के ऊपर घी डालना होता है।

मित्र को जितना घी चाहिए था, हीराबा घी के डिब्बे को धीरे-धीरे झुकाकर उतना ही डाल रहे थे।

अंबालालभाई को रौब दिखाने के लिए मन में ऐसा था कि घी का डिब्बा ऐसे उलट देना चाहिए। इसलिए हीराबा को इस तरह घी डालते हुए देखकर उन्हें मन ही मन गुस्सा आ गया और दोस्त के आगे खुद की इज़्ज़त चली गई हो ऐसा लगा।

उस मित्र के जाने के बाद में अंबालालभाई ने हीराबा को डाँटा।

इस तरह घी की ऐसी धार डालती हो? ऐसा नहीं चलेगा। एकदम डिब्बा पूरा उलट ही देना चाहिए (सारा घी परोस देना है)।

मैं तो दे रही थी और धीरे-धीरे दे रही थी। आप इस तरह शुद्ध घी डलवा दो, उसका क्या अर्थ है? मैं आपके दोस्त को क्या कुछ कम देनेवाली थी!

बस ऐसा ही करके मेरी बेइज़्ज़ती कर देते हैं।

यह तो मेरी ही भूल है। मेरा यह स्वभाव तो एबनोर्मल* है। यह मेडनेस** है। यह तो एक तरह की आसक्ति ही है। **अतिशय नोबल होना, पागल होने जैसा है और बहुत कंजूसी करना, वह भी पागलपन है। नोर्मेलिटी चाहिए।** ये हीराबा नोर्मल हैं।

उस दिन से अंबालालभाई ने ऐसा सार निकाल लिया कि इसमें हीराबा की बात करेक्ट है। उस करेक्टनेस में आ जाना है, बाकी कुछ नहीं देखना है। बाकी सब तो संयोगवश होता है। वह तो भगवान से भी नहीं बदला जा सकता न!

*एबनोर्मल-असामान्य, **मेडनेस-पागलपन

कई बार घर के बरांडे पर बैठकर अंबालालभाई दुनिया के रंग देखते रहते थे। ऐसे में उनकी कान में मीठी आवाज़ आई।

अंबालालभाई की विचक्षण नज़र ऐसी थी कि पूरी टोकरी में से सबसे अच्छे माल के ऊपर ही नज़र घूम जाती और वही ले लेते।

अंबालालभाई ने बेर खाया।

अरेरे, कैसा साइकोलोजिकल इफेक्ट है यह! यह कहती है कि लो रे मीठे बेर और लोगों को मीठे लगते भी हैं। और खट्टे बेर बिक भी जाते हैं। इस दुनिया में अच्छा-बुरा माल खपाने के लिए लोगों को कितना सच-झूठ बोलना पड़ता है?

ऐसी छोटी-छोटी घटनाओं से भी, अंबालालभाई की इस गहरी दृष्टि का पता चलता है कि यह दुनिया कैसे चलती है।

एक बार व्यापार के कामकाज के बारे में बात करते-करते अंबालालभाई की एक भाई के साथ खटपट हो गई। तब वह व्यक्ति जैसा-तैसा बोलने लगा। और क्रोध ही क्रोध में नहीं कहने जैसे शब्द भी अंबालालभाई से कह दिए। गलत वाणी और कठोर भाषा सुनकर अंबालालभाई का दिमाग़ गरम हो गया। और कड़क भाषा में उन्होंने उस व्यक्ति को डाँटना शुरू कर दिया। लेकिन उस आदमी पर कोई असर नहीं हुआ और उसने टेढ़ा बोलना बंद नहीं किया। यह देखकर अंबालालभाई और अधिक उत्तेजित हो गए।

उस समय अंबालालभाई के जान-पहचानवाले एक भले और समझदार वकील वहाँ से होकर गुज़र रहे थे, उन्होंने यह झगड़ा सुना।

ओत्तारी! क्या मैं लेटरीन के दरवाज़े पर लात मार रहा हूँ? यह भला किस तरह की सिमिली* है? लेकिन अवश्य ही, इनकी बात बहुत उच्च प्रकार की लगती है! समझने जैसी लगती है!

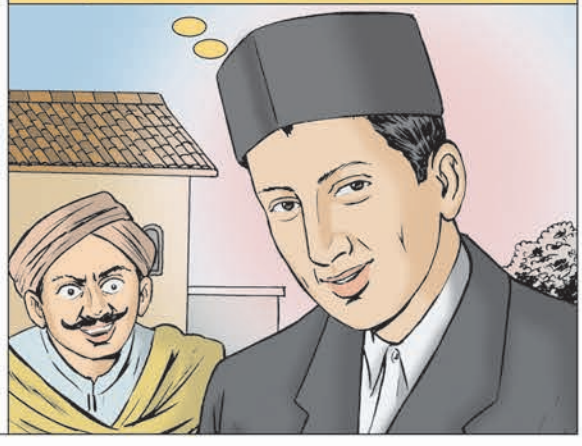

* सिमिली-उपमा

इस तरह वे दूसरों की मार्मिक बातों को समझकर अनुभव में लेते गए।

* खली-बीज मे से तेल निकालने के बाद बचा हुआ भाग...

एक बार अंबालालभाई किसी दूसरे शहर गए थे, वहाँ उनके एक रिश्तेदार के यहाँ पर रुके थे। रात को खाना खाने के बाद अंबालालभाई उनके साथ बैठकर बातें कर रहे थे।

अरे, अभी तो भर जवानी में है। आज ही उनसे मिलकर आया हूँ। बिल्कुल अंतिम सांसें ले रहे हैं। मेरी जवान बहन, उसे कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है! भगवान न करे अगर जीजाजी को कुछ हो गया, तो मेरी बहन की क्या दशा होगी। इतनी छोटी उम्र में! अरेरे! उसे ऐसे दिन देखने का समय क्यों आया?

उनके रिश्तेदार की चिंताभरी बातें सुनकार अंबालालभाई का कोमल हृदय हिल उठा। उनकी बहन को कितना दु:ख उठाना पड़ रहा होगा और भविष्य में क्या होगा ऐसा सोचकर अंबालालभाई भी चिंता में डूब गए। जब कि वे संबंधी खरार्टे लेने लगे! अभी तो मुश्किल से ग्यारह बजे होंगे, लेकिन अंबालालभाई के साथ बातें करते-करते वे गहरी नींद में सो गए!

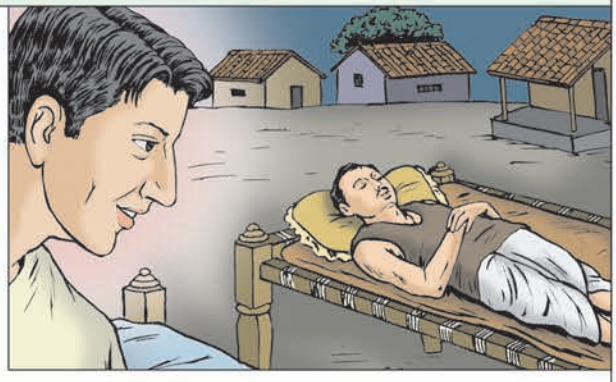

इस तरफ़ अंबालालभाई की नींद तो बिल्कुल उड़ गई। उन्हें इतनी चिंता होने लगी! उस व्यक्ति के बहन-जीजाजी की चिंता में अंबालालभाई को तो पूरी रात नींद ही नहीं आई!

* सीरियसली- गंभीरता पूर्वक

**सुपरफ्लुअस-सतही

अंबालालभाई को काम पर जाने से पहले रोज़ सुबह नाश्ता करने की आदत थी। रोज़ सुबह देसी घी की मिठाई और सेव, ये दोनों चीज़ें खाकर ही वे काम पर जाते थे। इस प्रकार से नाश्ता करने की उन्हें आदत पड़ गई थी।

लेकिन उनकी हर एक बात को गहराई से जाँचकर करके देखने की पद्धति कुछ न्यारी ही थी!

इस तरह नाश्ता खाकर मज़े उड़ाना तो कुदरत के पास से लोन लेने के बराबर है। जो मज़ा लिया है, उसके बदले में कुदरत को रीपेमेन्ट तो करना ही पड़ेगा न एक दिन! यह बाहर का खाने से शरीर बिगड़ेगा, कोई न कोई रोग, दर्द या परेशानी खड़ी हो जाएगी! और कुदरत यह रीपेमेन्ट* लिए बगैर छोड़ेगी नहीं।

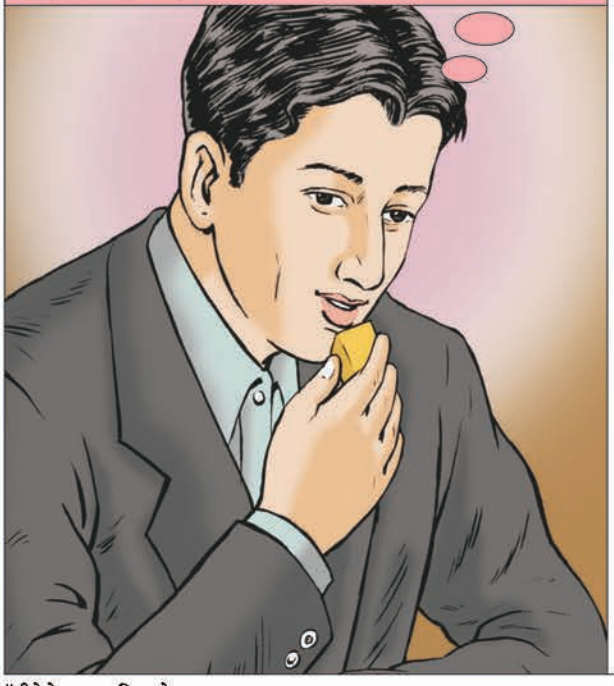

इसलिए नाश्ता या खाने की चीज़ों में मज़ा लेने जैसा नहीं है, सावधानी से चलना चाहिए! यह देह अच्छी रहे, सभी दांत सलामत रहें, फिर भी मृत्यु आए तब तो उन्हें जला ही देते हैं न! फिर ऐसी देह के पोषण में मज़ा लें, उसका कोई अर्थ ही नहीं है! यदि अचानक मृत्यु हो जाए तो यहाँ जिस रोग से मरा, वही रोग फिर से अगले जन्म में साथ में आएगा।

*रीपेमेन्ट- वापिस देना

एक बार अंबालालभाई को एक शादी में जाना था। इसलिए समारोह में जाने के लिए वे नया सफेद लंबा कोट, टोपी और बूट पहनकर तैयार हो गए। घर से निकलकर गली के रास्ते पर चलकर जा रहे थे, कि इतने में अचानक पास के मकान की ऊपर की मंज़िल से एक व्यक्ति ने पान खाकर रास्ते पर थूका। अंबालालभाई का वहाँ से चलकर गुज़रना और उस आदमी का थूकना– और टाइमिंग ऐसे मिले कि थूक बिल्कुल अंबालालभाई के सफेद कोट पर गिरा।

अंबालालभाई ने रुक कर ऊपर देखा तो किसी आदमी को दौड़कर घर के अंदर जाते हुए देखा। फिर खुद के कोट की तरफ़ नज़र की, तो सफेद कोट पान के लाल दाग़ से खराब हो गया था।

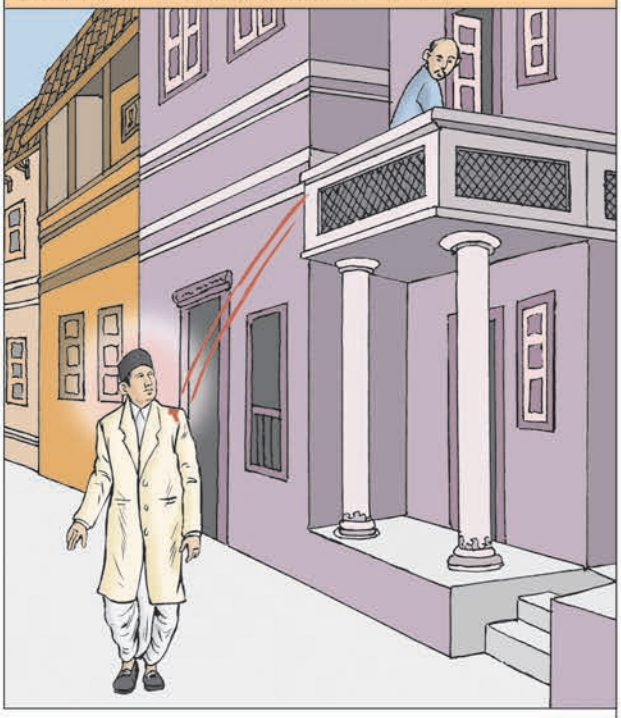

इस आदमी को भी ठीक आज ही थूकना था। अरे अरे अरे! यह नया-नया कोट...और पूरा खराब हो गया आज तो! अब तो घर जाकर फिर से कपड़े बदलने पड़ेंगे!

अंबालालभाई वापिस मुड़कर अपने घर की तरफ़ चलने लगे। चिल्लाकर उस आदमी को बुलाकर धमकाने का तो विचार तक नहीं आया उन्हें। चलते-चलते उनके मन में अनेक विचार घूम गए।

उस समय अंबालालभाई के जान-पहचानवाला कोई एक आदमी वहाँ से गुज़र रहा था।

देख इसके बजाय अगर ऊपर से कोई पत्थर गिरता और मेरे कपड़े खराब हो जाते तो मैं किसकी भूल निकालने जाता और किसे डाँटने जाता? और अगर कबूतर की बीट गिरने से कपड़े खराब हो जाते, तो? मैं थोड़े ही कबूतर के साथ झगड़ा करने जाता?
ठीक है चाचा, लेकिन यह तो आपने देखा कि उस व्यक्ति ने थूका है, फिर उसे तो कह सकते थे न?
अब उसे मैं क्या कहता? देख! मुझे बता तो ज़रा, अगर उस व्यक्ति ने थोड़ा-सा पहले या थोड़ा बाद में थूका होता, तो मैं कहाँ पर होता?
या तो आप वहाँ पर पहुँचे ही नहीं होते या फिर वहाँ से गुज़र चुके होते!
ठीक है न? तो फिर उसका थूकना और थूक का ठीक मेरे कोट पर गिरना, इतने एक्ज़ेक्ट टाइमिंग क्यों मिले होंगे? कोई कारण तो होना चाहिए न?

*ऐसी थी अंबालाल की दृष्टि! उनके अंतर में रिवोल्युशन खूब ही फास्ट घूमते थे। कोई भी घटना हो, उसके अनेक * फेज़ेज़ उन्हें एक साथ दिखते थे। 'ऐसा क्यों हुआ?' 'इन संयोगों का कर्त्ता कौन है?' इन प्रश्नों पर उनकी विचारधारा सतत चलती रहती थी।*

*फेज़ेज़-अवस्थाएँ

रोज़मर्रा के जीवन में ऐसा तो कितनी ही बार होता था। एक बार अंबालालभाई घर में बेन्च पर बैठे हुए थे और उन्हें विचार आया कि मुझे बाल कटवाने है।

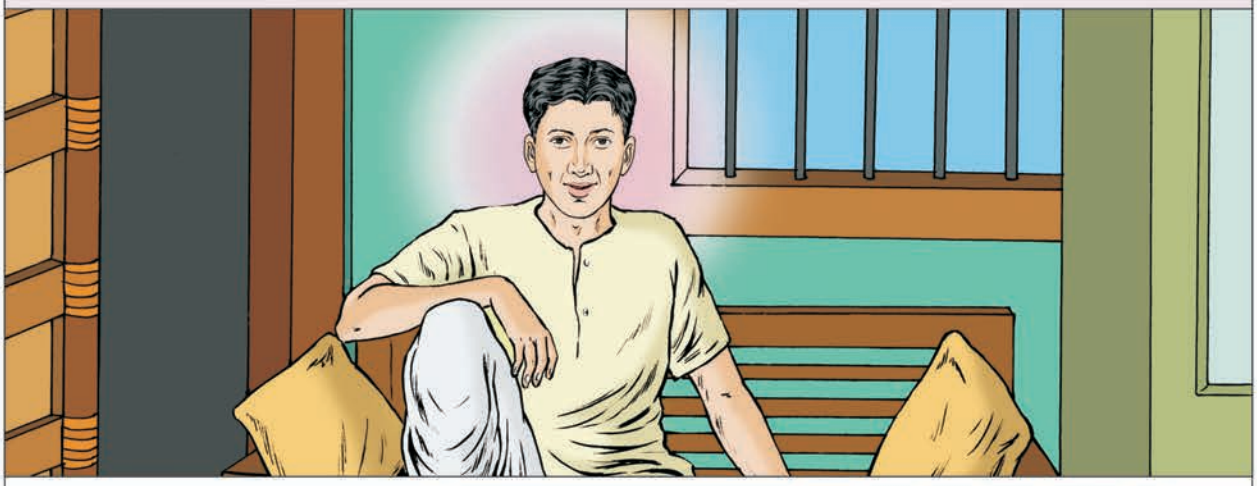

ऐसा सोचकर अंबालालभाई ने तय किया कि आज बाल कटवाने जाना ही है। फिर घर में कहा....

और नाई की दुकान पर पहुँच गए। वहाँ पर लिखा था कि 'मंगलवार को दुकान बंद है।' खुद की इच्छा थी फिर भी यह कार्य होने योग्य नहीं था, इसलिए चुपचाप वापिस घर लौट जाना पड़ा।

दूसरे दिन दुकान पर बाल कटवाने गए। दुकान खुली देखकर बाल कटवाने के लिए कुर्सी पर जाकर बैठ गए।

इसलिए उन्हें दस मिनट तक इंतज़ार करना पड़ा!

१०-१५ मिनट के बाद वह बाल काटनेवाला आया और कैंची लेकर चक-चक बाल काट दिए। यानी बाल कटने का संयोग आया और पूरा हो गया।

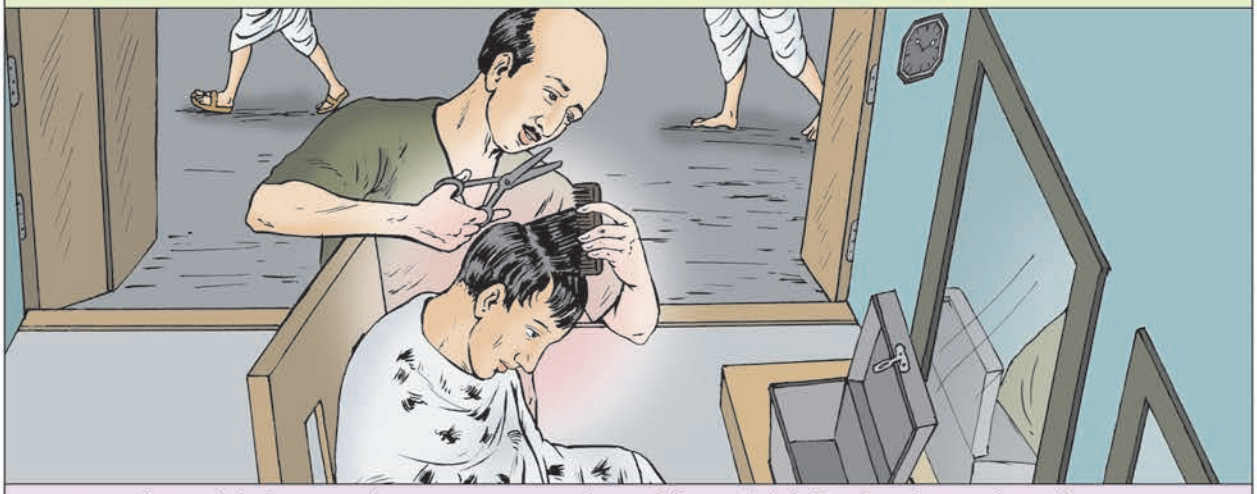

इतना एक कार्य पूरा करने के लिए-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव इस तरह से चार चीज़ें इकट्ठी होती हैं, तभी कार्य सम्पन्न हो पाता है।

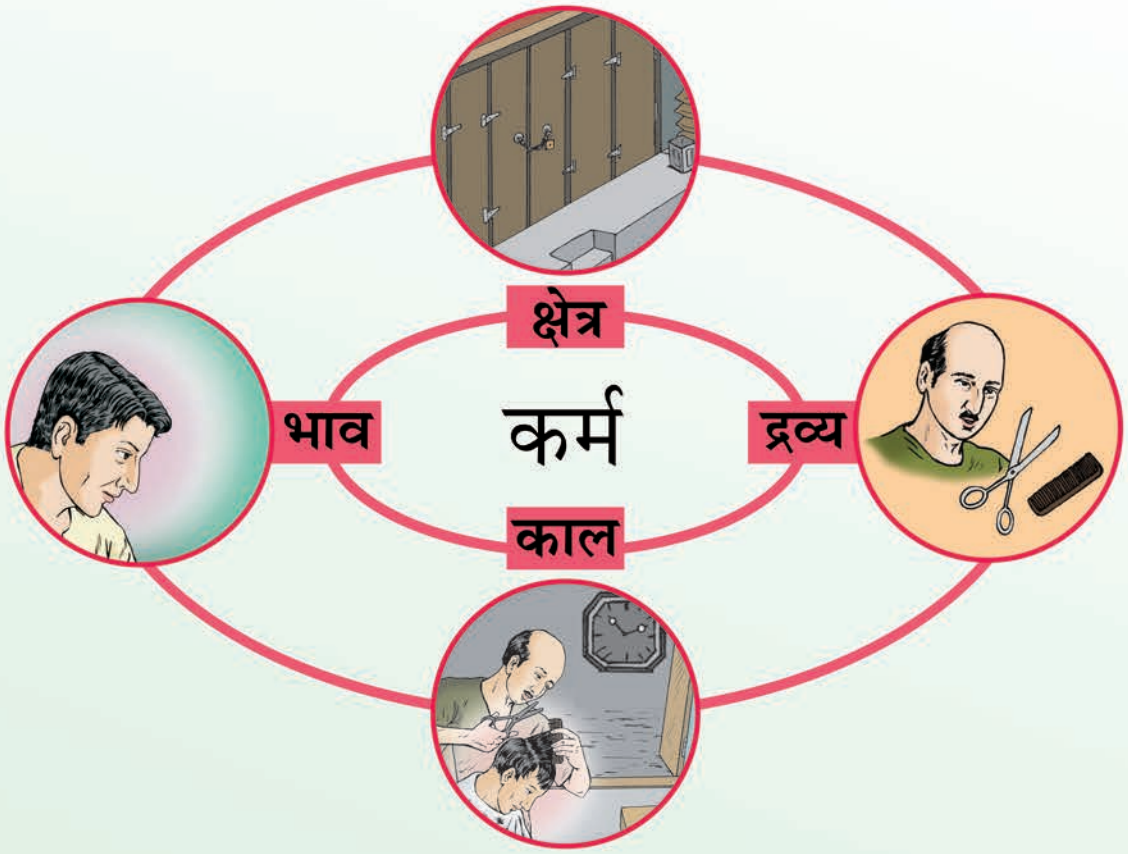

सामान्य रूप से व्यवहारिक जीवन में ऐसे मूलभूत कारणों को खोजने की दृष्टि ही नहीं होती है न? कोई कार्य पूरा नहीं होता अथवा इच्छानुसार नहीं होता, तब सभी एक-दूसरे पर दोषारोपण कर देते हैं! उसी तरह से जब कोई कार्य नहीं हो पाता है, तो ऐसा किस कारण से हुआ होगा? उसकी जाँच करते-करते अंबालालभाई ने ढूँढ निकाला कि इसके लिए कोई एक व्यक्ति जिम्मेदार नही हैं । जब तक द्रव्य, क्षेत्र,काल ओर भाव, ये चार प्रमाण नही मिल जाते , जब तक इनमें से एक भी प्रमाण की कमी है, तब तक वह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता, ऐसी कुदरत की व्यवस्था है,

तो दोस्तों,इसके बाद के जीवन में से अलग-अलग संजोगों में से गुजरते हुए, उनके एक से बढ़कर एक जीवन सार को जानने के लिए तथा उनके अनुभव के निचोड़ में से उम्दा बोध समझेंगे भाग-४ में.....

बालविज्ञान की अन्य प्रस्तुतियाँ

स्टोरी बुक

मन्थली मेगेझीन

V.C.D./D.V.D.

पिक्चर बुक

गेम्स

''ऐसा क्यों हुआ?''...''मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ?'' वगैरह प्रश्नों के व्यवहारिक समाधान खोजते हैं, तब एक-दूसरे पर दोषारोपण हो जाते है, आक्षेप दिए जाते हैं, खींचतान होती है और उलझनें बढ़ती हैं! लेकिन वैज्ञानिक तरीक़े से इसका हल ढूँढ निकालें तो? पूरी दुनिया निर्दोष दिखे, मन में कोई गांठ नहीं रहे, ऐसा अलौकिक और असामान्य दृष्टिकोण हमें जीवन जीने की कला सिखाने में खूब ही प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

ISBN 978-81-89933-43-2
9 788189 933432
₹ 40 Printed in India